तृतीय अध्याय

" 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के संवादों (कथोपकथन) का अध्ययन "

तृतीय अध्याय

विवेच्य उपन्यास के संवादों (कथोपथन) का अध्ययन

कथोपकथन उपन्यास का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। प्रत्येक कुशल उपन्यासकार कथोपकथन (संवादों) के माध्यम से न केवल अपने पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का चित्रण करता है बल्कि कथावस्तु का भी विकास करता है। कथोपकथन के बारे में श्यामसुन्दर दास ने लिखा है - '' इस तत्त्व के द्वारा हम उपन्यास के पात्रों से विशेष परिचित होते है और दृश्य काव्य की सजीवता और वास्तविकता का बहुत कुछ अनुभव करते है।'' [1]

कथोपकथन का उपन्यास के सभी तत्त्वों से कम - अधिक संबंध है, उनका सीधा संबंध पात्रों से और उनके चरित्र - चित्रण से होता है, पात्रों के भावविचार और संवेदनाओं को व्यक्त करने, उनकी क्रिया प्रतिक्रिया के पिछे छूपी प्रेरणाओं के चित्रण में तथा उनके एक दूसरे पर पडे संस्कारों को अभिव्यक्त करने में कथोपकथन बडे कारगर सिध्द होते है।

प्रेमचन्द उसी उपन्यास को सुन्दर मानते हैं, जिनमें वार्तालाप अधिक से अधिक हो और लेखक की कलम से जितना ही कम लिखा हो।

कथोपकथन का प्रयोग कथानक को गति देने, पात्रों के चरित्र का उद्‌घाटन करने, समाज के किसी वर्गविशेष की प्रवृत्तिओं को प्रकाश में लाने, वातावरण की सृष्टी करने आदि कई उद्‌देश्यों से होता है। पात्रों के कथोपकथन से उनके हृदय के भाव, इच्छा, आकांक्षा और स्वभाव, संबंधी जानकारी मिलती है। कथोपकथन से उपन्यास में स्वाभाविकता, सजीवता और विश्वसनीयता के दर्शन होते है। कथोपकथन ही उपन्यासों की कथावस्तु में नाटकीयता और सजीवता लाते है, जिससे पात्रों में प्राणों का संचार होता है।

डॉ. प्रतापनारायण टंडनजी के अनुसार ''स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, भावात्मकता, अनुकूलता, सम्बध्दता, उद्‌देश्यपूर्णता आदि कथोपकथन के विशिष्ट गुण है।'' [2] इन गुणों के अभाव में कथोपकथन नीरस एवं अविश्वसनीय बन जाता है। कथोपकथन ही उपन्यास के उद्‌देश्य और फलप्राप्ति का साधन है।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के उपन्यासों के संवाद पात्रानुकूलता से ओतप्रोत हैं। पात्र अपने परिवेश, जीवन - शैली, अपनी स्थिति, अपना स्तर आदि के अनुसार संवाद स्थापित करते हैं। आज के उपन्यासों के संवाद शुध्द साहित्यिक खडीबोली हिंदी भाषा के अनुसार न रहकर उसमें परिवेशानुकूलता बोली भाषा का समन्वय, उर्दू - फारसी - अँग्रेजी शब्दों की प्रचुरता रहती हैं। इससे भाषा का संपूर्ण ढाँचा चरमरा हो उठता है।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी श्रेष्ठ रचनाकार है, उन्होंने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में कथोपकथन के गुण तथा कथा की उद्‌देश्यपूर्ती को ध्यान में रखते हुए संवादों की योजना की है। जिस कारण उपन्यास की कथावस्तु यथार्थ और सामान्य आदमी से संबंध स्थापित करनेवाली दिखाई देती है।

विवेच्य उपन्यास के संवादों (कथोपकथन) का विवेचन लेखक ने उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कैसे किया है, इसे हम यहाँ देखेंगे –

3.1 संवादों में नई अवधारणाओं का प्रयोग

संवादों की दृष्टी से उपन्यासकार अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में नये - नये प्रयोग किए हैं। उपन्यासों के संवादों (कथोपकथन) में उन्होंने नई अवधारणाओं का प्रयोग किया है जिससे संवाद प्रसंग एवं घटना के अनुकूल बन पडे हैं। रचनाकार अब्दुल बिस्मिल्लाजीने संवादों में अनेक भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। उसमें अँग्रेजी, अरबी - फारसी - उर्दू तथा बुंदेलखंडी बोलचाल की भाषा का प्रयोग बहुलता के साथ किया है। प्रस्तुत उपन्यास में प्रस्तुत प्रयोगों को हम विस्तार से देखेंगे -

संवादों में अँग्रेजी भाषा का प्रयोग :-

प्रस्तुत उपन्यास के संवादों में अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है, उपन्यास का लल्लु नाम का एक शिक्षित पात्र हमेशा अँग्रेजी भाषा में संवाद स्थापीत करता है। लल्लू का अँग्रेजी मिश्रित हिंदी के संवाद भाषा में एक नया प्रयोग प्रस्तुत करते हैं। जैसे -

" सोचिए तो वर्क की बातें इन्हें आती नहीं
सिर्फ आता है इन्हें टु फ्लाइट काइट नाउ अडेज।
डार्कनेस छाया हुआ इंडोस्टाँ में चारों ओर
नेम को बी है कहीं बाकी न लाइट नाउ अडेज।" [3]

अपने बारे में जानकारी देते हुए भी लल्लू अँग्रेजी मिश्रीत हिंदी का उपयोग करता है। जैसे - " एक्चुअली आई एम वेरी बिजी । बुध्दू तुम्हें नालेज नहीं है, मैंने अब नौटंकी, रामलीला वगैरा में रोल करना बंद कर दिया है। पूछो व्हाई ? बिकाज आइ एम द चैयरमैन आफ आल नौटंकीज एंड रामलीलाज कमेटी। बलापूर, करमा, उभारी, गोंती घुघापुर, घूरपुर..... आल.....।" [4]

बुदधूद्वारा गाना गाने को कहने पर भी लल्लू इस प्रकार इन्कार करता है- " नो, नो। अब मैं एक सीरियस मैन हो गया हूँ। तुम इंग्लिस नहीं जानते, इसीलिए हिंदी में बात कर रहा हूँ। बट एवहरीव्हेअर आई यूज टू टाक इन इंग्लिस। लखनऊ में एक कंपिटीसन हुआ था इंग्लिस टाकिंग का उसमें फर्स्ट आया हूँ।" [5]

लल्लू के अतिरिक्त उपन्यास के अन्य पात्र भी अपने संवादों में अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसे - " ए बवाली, तुम अपनी पालिटिक्स न भिडाओ यहाँ।" तथा "अलो अलो.... पंडित सृष्टिनारायणजी जहाँ कहीं भी हो स्टेज के पीछे चले आएँ।" आदि संवादों से उपन्यास के संवादों में वर्णित नई अवधारणाओं का चित्रण प्राप्त होता है जिससे नये-नये भाषागत प्रयोग हुए है।

संवादों में संस्कृत भाषा का प्रयोग :-

प्रस्तुत उपन्यास में पं. शिवपूजन तिवारी और पं. सृष्टिनारायण पाण्डे के बीच शास्त्रार्थ के बारे में चर्चा होती है, वहाँ वे दोनों संस्कृत भाषा के वेद तथा श्लोक आदि पर चर्चा करते हैं, जिससे उपन्यास के संवादों में संस्कृत भाषा के

शब्दों एवं श्लोकों का प्रयोग हुआ है। जैसे - सृष्टिनारायण पाण्डे, पं. शिवपूजन तिवारी से एक संस्कृत श्लोक का अर्थ पुछते हुऐ कहते है –

" न विष्णूपासना नित्या वेदेनोक्ता तु कस्यचित
न विष्णूदीक्षा नित्यास्ति शिवस्याादि तथैव च।
गायत्रयुपासना नित्या सर्ववेदैः समीरिता
मया विना त्त्वधः पातो ब्राह्मणस्थास्ति।" [6]

आचार्य शिवपुजन तिवारीजी को इस श्लोक का स्पष्टीकरण देने नहीं आता वे सच्चिदानंद के बारे में अपनी जानकारी प्रकट करते हुए कहते है - " क्या कहा आपने ? सच्चिदानंद ! यह सच्चित कैसे बनता है, सुनिए, मैं बताता हूँ। सकारतवर्गयोः शकारचवर्गोभ्यां योणे शकारचवर्गौस्तः। इसका सूत्र है स्तोःश्चुनाश्चुः।" [7]

उपन्यास के दुसरे एक प्रसंग में पं. सृष्टिनारायण पाण्डे और अशोक कुमार पाण्डे के युवा मित्रो में संस्कृत भाषा के बारे में संवाद परिलक्षित हुए है, चर्चा के दौरान अशोककुमार पाण्डेजी का एक युवा मित्र कहता है - " गोस्वामी तुलसीदास की बात सत्य सिध्द हो रही है। 'मानस' में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है -

" मातृ पिता तिज सुतहिं बोलावहिं
उदर भरई सोइ धर्म सिखवहिं। " [8]

आदि प्रसंगों के माध्यम से उपन्यास के संवादों में संस्कृत भाषा की प्रचुरता भी दृष्टिगोचर होती है।

संवादों में उर्दू - अरबी - तुर्की भाषा के शब्दों का प्रयोग :-

उपन्यास के अधिकांश पात्र मुसलमान होने के कारण उनके संवादों में उर्दू - अरबी - फारसी भाषा के कई शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिससे उनकी भाषा मिश्रित उर्दू - हिंदी भाषा के रूप में दिखाई पडती है। अली अहमद जलील से कहता है - " ठीक है, पहले तुम मीलाद का इंताजाम करो। कब कर रहे हो ? जुमा के रोज करना, जुमेरात या जुमा के रोज नेक काम करने से ज्यादा सवाब मिलता है।" चुनिया की शादी के दौरान इस्लाम के बारे में अपना मत प्रकट करते हुए एक युवक कहता है सिद्दीकी का मतलब है हज़रत सिद्दीक रजिअल्लाह तआला की नस्लवाले। हज़रत सिद्दीक रजिअल्लाह तआला वो पहले शख्स हैं जिन्होंने इस्लाम कबूल किया था।" [9] इससे उपन्यास के संवादों में उर्दू - अरबी - फारसी भाषा के शब्दों की बहुलता मिलती है।

संवादों में मिश्रित शैली का प्रयोग :-

उपन्यास में बांग्लादेश की आजादी की घटना का लेखक ने उल्लेख किया है, उस समय हजारों 'बांग्ला' लोग हिंदूस्तान में आये जिसमें से बंगाली बाबू एक है। बंगाली बाबू बलापुर में आकर रहते है यहाँ के लोगों के साथ जब वे संवाद स्थापित तो टूटी - फूटी हिन्दी में बोलते है, जिससे संवादो में एक नयापन आता है, जिससे मिश्रित शैली का रूप नये प्रयोगों के रूप में उभरता है। - जैसे- "

नोमश्कार। '.....तुम ये बैंगल काँ से लाता । 'क्या करते इतने बैंगेल का। '..... तुम हमारा स्त्री को भी पैनाएगा ? ..... 'तो बेज देना ओशे।' कली बेज देना। .....'नई। अम चोलेगा। सिपाई मारेगा नईं तो । तुम ये बैंगेल जोरूर बेज देना, आँ.....।'' [10]
इस मिश्रित शैली से उपन्यास के संवादों में आया नयापन स्पष्टतया दृष्टिगोचर होता हैं। इन प्रयोगों के कारण उपन्यास के संवादों में किया नई अवधारणाओं का प्रयोग सजीवता के साथ झलकता है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित संवादों में भाषागत नई अवधारणाओं के प्रयोग मिलते हैं। अनेक भाषा के प्रयोगों ने संवादों को यथार्थता प्रदान की है।

3.2 परिवेशानुकूल संवाद

प्रस्तुत उपन्यास में उभरी विभिन्न प्रवृत्तियाँ परिवेश की उपज लगती है। इस उपन्यास के पात्र परिवेश के माहौल में घुलमिल गये हैं, तथा अपना व्यक्तित्त्व उसमें गढ़ाते हुए दिखाई देते हैं। 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में लेखक ने स्वाधीनता के बाद से लेकर आपातकाल लागू होने तक की कथावस्तु वर्णित की जिसमें नई - पुरानी पीढ़ी के संघर्ष, नारी शिक्षा, अस्तित्त्ववाद के दर्शन, परिवारों की बदलती स्थिति, राजनीति के दर्शन, सांप्रदायिकता, जातीय भेदाभेद, अन्याय - अत्याचार, चुनाव, धर्मांतर, भ्रष्टाचार आदि प्रवृत्तियाँ उभरकर सामने आयी हैं जिसके अनुसार उपन्यास के पात्र अपना जनजीवन व्यतीत करते हैं, और उन परिवेश के घटनाओं, प्रसंगों के अनुसार संवाद स्थापित करते हैं। इसका विवेचन यहाँ प्रस्तुत हैं -

पूंजीपतियों के शोषण से उभरे संवाद :-

समाज में जमींदारों, पूंजीपतियों का बोलबाला है वह निम्न जाति के लोगों का शोषण करते हैं, जिससे त्रस्त मखदुम नाऊ अपनी दयनीय स्थिती के बारे में कहता हैं - "बड़मनइन के यहाँ सोडरी से लेके बियाह के बखत तक लडकिन का बाल मुफ्त में ही बनाना पडता है। बदले में एक डब्बल नहीं मिलता। कहते हैं, बियाह में नेग न लोगे क्या ? अब तुम्ही सोचों, यही नियाव है क्या ? मगर सब रिवाज तो बडमनइन का बनाया हुआ हैं कि नहीं। कभी दुई पइसा - एक आना देंगे, तो ऐसे मानो कर्जा दे रहे हों।" [11] अली अहमद अपनी शोषणग्रस्तता का परिचय देते हुए कहता हैं - " अरे बबवा की अम्माँ, हम तो गए थे जवाहरलालजी से शिकायत करने, मगर अल्लामियाँ जब हमारी किस्मतै लोढा से लिक्खे हैं तो क्या करें ? " [12]

इस संवादों से मखदूम नाउ तथा अली अहमद अपनी अन्यायग्रस्तता का परिचय देते हैं, जिसमे परिवेश में निर्माण हुऐ अन्यायी जमींदारों की प्रवृत्ति का चित्रण उजागर होता है।

दुर्बल असहाय्य नारी का परिचय करनेवाले संवाद :-

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने नारी की असहाय्य, अत्याचारग्रस्तता का चित्रण निम्न संवादों से व्यक्त किया है। पंडित सृष्टिनारायण पाण्डे फुल्ली दाई की नातिन रामकली की इज्जत लुटते है, तब वह घबराकर कहती है - " दाई, दाई, ऊ दहिजरा हमरे उप्पर गिरि के हमका दबाए देत रहा.....।" [13] फुल्ली दाई इस घटना से घबराकर रामकली से पूछती है कि - " के? के रहा, बोल ? " तब रामकली सृष्टिनारायण पाण्डे का नाम बताती है। पाण्डेजी का नाम सुनते ही फुल्ली दाई अपनी नातिन को कहती है" चुप - चुप ... सो जा।" [14]

इस घटना से जमीदारों के खिलाफ कोई भी व्यक्ति आवाज नहीं उठा सकता, तथा अन्याय सहने की लोगों की वृत्ती स्पष्ट रूप में सामने आती है। इन संवादों से परिवेश का चित्रण स्पष्ट होता है।

सांप्रदायिकता के दर्शन करानेवाले संवाद :-

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने सांप्रदायिक भेदाभेद का चित्रण किया है। उपन्यास के एक प्रसंग में समाज के उच्चवर्णिय बच्चोंद्वारा अली अहमद का बेटा बुद्धू को जातीयता एवं धार्मिकता के नाम पर अपमानीत किया जाता है। वह संवाद इस प्रकार हैं - " अरे कटुवा है न, ... इन लोगों के सारे काम उल्टे होते हैं हम लोग सीधे ढंग से हात धोते हैं, ये लोग उल्टे ढंग से । हम लोगों के यहाँ सीधे तवे पर रोटी बनती है, इनके यहाँ उल्टे तवे पर। हम लोग बाल मुडाते हैं, ये लोग नूनी कटाते है। सुना नहीं हैं ? हिंदुअन की फलान और मियन की दाढी.....।" [15] इस संवाद से गाँव के छोटे बच्चे बालबच्चे तथा देश के ग्रामीण परिवेश तक फैली सांप्रदायिकता के दर्शन होते हैं।

समलिंगी संबंध को उजागर करनेवाले संवाद :-

प्रस्तुत उपन्यास में सृष्टिनारायण पाण्डे मुन्ना को रखैल बनाकर उसके साथ समलिंगी सम्बन्ध स्थापित करते हैं। उसका परिचय इस संवाद से स्पष्ट हो जाता है, मुन्ना सृष्टिनारायण पाण्डेजी से कहता है - " हम का बतोवैं महराज, आप बताइए कि हममें दोख का है ? हम न आपन बाप - मतारी, आपन पेट, आपण इज्जत, सबकुछ आपके चरनों में अरपित कर दिए हैं, ... ऊ दिन भूल गए का, जब हम्में बगल में लेके सोते थे ? ..... काहें महराज अब हम कहाँ जाईं ? "

इस प्रसंग में सृष्टिनारायण पाण्डे मून्ना नचनिया को रखैल बनाकर उसका शोषण करते हैं, तथा गाँव से निकलने की धमकी देते हैं। उपन्यास के परिवेश में पनपनेवाले अप्राकृतिक समलिंगी संबंध इस संवाद से दृष्टिगोचर होते है। उपभोग लेने की और उपभोग लेने के बाद फेंक देने की जमींदारों की प्रवृत्ति के यहाँ दर्शन होते है।

पुरानी पीढ़ी - नई पीढ़ी के संघर्ष को व्यक्त करनेवाले संवाद :-

उपन्यासकार अब्दुल बिस्मिल्लाइजी ने उपन्यास की कथावस्तु में यह दिखाया है कि पूरानी पीढ़ी, नई पीढ़ी पर अधिकार जमाना चाहती है, इसका चित्रण इस संवाद के माध्यम से व्यक्त किया है... " तो ? तो यह सब होता रहे ? ..... 'ठीक है, फिर हम चलते हैं।' कल के लऊँडे जँघिया पहनने का सहूर नहीं हमसे जबान लडाते हैं।' ... ऊ रामदेव चमार, तोते पासी, अउर डाक्टर साहब, हमारे रिस्तेदार हैं न, कि हम परेसान हैं। अरे ई पूरे गाँव - जवार के भविस्य का मामला है। समझे? " [16] इस संवाद में बवाली अपने से कम उम्र के अजय को

टोकता है, जिससे नई - पुरानी पीढ़ी के अंतर को लेखक ने स्पष्टरूप में व्यक्त किया है।

आधुनिकता बोध के दर्शन करनेवाले संवाद :-

प्रस्तुत उपन्यास के कई पात्र परंपरागत रूढ़ी, परंपरा को नकारते है, तथा आधुनिकता को स्विकारते है, इस आधुनिकता बोध का परिचय कुछ संवादों के माध्यम से प्राप्त होता है। लता जो कि एक शिक्षित युवती है, जाँत - पाँत का भेदभाव न मानते हुए बुद्धू के घर पानी पीती है, वह इस संबंध में स्पष्टीकरण देते हुए कहती है कि - " क्यों ? पानी पीने में क्या बुराई हैं ? ' ..... देखो बुद्धू ये बातें बहुत पुरानी हो गईं। समझे ? ..... शहर में तो सभी लोग सभी के साथ सभी कुछ खा - पी रहे हैं। अंडा अब रामलड्डू बन गया हैं और मछली जलतरोई।" [17] दुसरे एक प्रसंग में बुद्धू अपने परंपरागत व्यवसाय का विरोध करते हुए कहता है - " ये क्या हो रहा है ? ताहिरा अब चूड़ी पहनाने जाएगी ? ..... आखिर क्या चाहती हो तुम ? चुड़िहारों के बच्चे भी चुड़िहार बनकर ही जिंदगी काटें? मगर अब ई सब नहीं होगा। समझी ? ताहिरा गँवई नहीं जाएगी । " [18] इन संवादों से आधुनिकता के दर्शन होते है।

घिन्नौनी राजनीति के दर्शन करनेवाले संवाद :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने उपन्यास में घिन्नौनी राजनीति का चित्रण स्पष्ट किया है। बलापूर के ग्रामप्रधान चुनाव में सृष्टिनारायण पाण्डे अपनी जीत के लिए दया शंकर पाण्डे से मिलकर षडयंत्र रचते हैं और उसे कहते है कि - " तुम भी प्रधानी इलेक्शन लडो ..... यही तो राजनीति है। ..... हम तो भई अब जनसंघी मान ही लिए गए हैं..... गाँव में अभी ठीक तरह से जनसंघ पर बिश्वास हुआ नहीं है। तुम पहले खडे हो जाओ फिर हमारे फेवर में बैठ जाना। इससे हमारी जीत सुनिश्चित जानो। क्या समझे? " [19] दूसरे एक प्रसंग में अशोककुमार पाण्डे गाँव के तीन निरदोस व्यक्तियों को कारावास होने के लिए दयाशंकर पाण्डेजी से कहते हैं - " पिताजी, यदि आप अपनी पार्टी का दबाव डलवा सकें तो सफलता निश्चित है। " इन संवादों से गाँव की घिन्नौनी राजनीति के दर्शन होते हैं।

विद्रोह की ज्वाला दर्शानेवाले संवाद :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठानेवाले पात्रों के संवादों का भी चित्रण किया है। जो शोषण से ग्रस्त होकर लडने के लिए तैयार हो गए हैं। बुद्धू को निरदोस होते हुए भी पाण्डेजी के कहने से गिरफ्तार किया जाता है, उस पर अली के मन में विद्रोह की ज्वाला भडक उठती है, और वह दयाशंकर पाण्डे से कहता है - " हमरे एक लड़िका हैं, बुधुवा को चाहे आप लोग जेल में डलवा दें, अउर चाहे फाँसी पर

लटकवा दें, मुलाँ अगर को ई सोचे कि डरके मारे हम गाँव - देस छोड़िके कहीं अउर चले जाएँगे तो ई आप लोगन की बहुत बडी भूल है।'' [20]

दूसरे एक प्रसंग में बवाली समाज में स्थापित अन्याय - अत्याचार नष्ट करने के लिए विद्रोह के स्वर में कहता है - ''जब तक जमींदारन अउर पूंजीपतवन का नास नहीं होगा, खुसहाली नहीं आएगी।'' इन संवादों से अन्याय - अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करने की बवाली की भावना उजागर होती है।

धर्मांतर का वातावरण स्पष्ट करनेवाले संवाद :-

प्रस्तुत उपन्यास में धर्मपरिवर्तन की प्रक्रिया को भी लेखक ने चित्रित किया है। धर्मांतर की प्रक्रिया को गति देनेवाला उपन्यास का एक पात्र पतरस भाई अली अहमद से कहता है - '' अगर तुम जैसा कोई इलाहाबादी आदमी ईसाई बन जाय न, तो हमारे समाज की हालत सुधर सकती है।'' [21]

रामदेउवा चमार हिंदू धर्म त्यागकर मुसलमान हो जाता है, इससे क्रोधित होकर सृष्टिनारायण पाण्डे बुद्धू को धमकाते हुऐ कहते है - '' हम एक बात कह रहे हैं, धियान से सुन लो। ऊ राम देउवा चमार मुसलमान हो गया है। सत्तार तो है नहीं, हमें पूरा विश्वास है कि उसे तुम्हारे अब्बा ने ही भडकाया होगा। उनसे कह दो कि गाँव में रहना है तो सोच - समझकर रहें। नहीं तो बात फिर बहुतै बिगड़ जाएगी समझे ? '' इस संवादों से उपन्यास में चित्रित धर्मपरिवर्तन की प्रक्रिया पर प्रकाश पड़ता है।

भ्रष्टाचार, हड़पनीति का वातावरण स्पष्ट करनेवाले संवाद :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में भ्रष्टाचार और हड़पनीति का वातावरण इन संवादों से स्पष्ट किया है। अशोककुमार पाण्डेद्वारा सरकारी जमीन हड़प करने की घटना को व्यक्त करते हुए सलिम कहता है - ''असोकवा नेता हो गया है। जो चाहता है, करता है। चमार - पासियों के वास्ते सरकार ने कुछ जमीन दी थी - भूमिहीनवाली योजना में मगर ऊ सब भी असोक़वा ने हथिया लिया।''

दुल्लोपुर में सरकारी जमीन हड़प करने की जलील की वृत्ती इस संवाद से स्पष्ट होती है - '' उधर गिरजाघर की तरफ तो फादर का कब्जा है, मगर इधर की तरफ कोई नहीं रोकता। जंगल ही है, कभी - कभी फारेस्ट गाड आता है तो चाय पीकर चला जाता है। वो भी मुसलमान है।'' [22]

सत्तार पोस्ट ऑफीस के बचतखातो के पैसों का भ्रष्टाचार करता है और गाँव छोडकर भाग जाता है। इस पर जवाहर हलवाई कहते है ''अरे जाना ही था तो चले जाते, जाएवाला को भला कउन रोक सकता है? मगर गाँववालन का पइसा देके तो जाते।'' [23] इन संवादों से उपन्यास में वर्णित भ्रष्टाचार और हड़पनीति की चित्र उजागर होता है।

निष्कर्ष -

संक्षिप्त में उपर्युक्त सारे संवाद परिवेशानुकूल संवादों के अच्छे उदाहरण हैं जिससे तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, सांप्रदायिक स्थिती के दर्शन होते हैं।

3.3 आत्मकथनात्मक संवाद

आत्मकथनात्मक शैली में प्रथम पुरूष में निवेदन प्रस्तुत किया जाता है। इस शैली में पात्र अपने बारे में जो कुछ कहता है, उसे आत्मकथनात्मक शैली के तहत रखा जाता है।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी लिखित 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के कूछ पात्र आत्मकथनात्मक शैली में अपना मंतव्य व्यक्त करते हैं, जिससे उपन्यास में आत्मकथनात्मक संवाद दृष्टिगोचर होते है उसमें से कुछ संवाद इस प्रकार है -

प्रस्तुत उपन्यास का मुख्य पात्र अली अहमद चुड़िहार पनवाडी से अपने बारे में बताते हुए कहता है - "हम आए हैं पंडित जवाहरलालजी से मिलने के वास्ते। हमारे गाँव में एक बाम्हन हैं, रामवृक्ष पाण्डे। बहुत जालिम है। हमें बेबात के मारा है। वही आए है सिकायत करने। जवाहरलालजी तो अपने ही जिले के हैं, अब राजा भी वही हैं, क्या अपने जिले की जनता के वास्ते कुछ न करेंगे.....? " [24]

दूसरे एक प्रसंग में अली अहमद अपनी पराजय की व्यथा को आत्मकथनात्मक शैली में इस तरह प्रकट करता है। - " हम तो गए थे जवाहरलालजी से शिकायत करने, मगर अल्लामियाँ जब हमारी किस्मत लोढ़ा से लिक्खे है तो क्या करे ? " [25]

प्रस्तुत उपन्यास में गाँव - जीवन से भागे हुए अली चुड़िहार के परिवार को अपनी कुटी में पनाह देनेवाला नुरू अपना परिचय आत्मकथनात्मक शैली में देते हुए कहता है- " मैं दो बरस पहले शहपुरा आया। इससे पहले अपने गाँव मुडकी में बनी - मजूरी किया करता था। मगर गाँव में गुजारा नहीं होता था। बस फसल के वक्त निराई - कटाई का काम मिलता है, वे भी दाने पर। एक रोज का तीन बरिहा कोदो, या डेढ़ बरिहा धान। तीन जनों के परिवार में इतने से भला काम चलता है ? घर में बीवी है और एक लडकी।" [26] नुरूद्वारा दिया गया यह परिचय आत्मकथनात्मक शैली का ऊँचा नमूना लगता है।

बांग्लादेश के विभाजन के समय भागकर हिंदूस्तान आकर शरणार्थी कैंपों में पनाह ले रहे बंगाली बाबू अपने बारे में कहते हैं - " अमारा जवान बेटा मार दिया गया। अमारा घर लुट गया। अब अम क्या करेगा जाके हमें जीवनदान दिया इंडिया ने ..... अम अब इसी जगे रहेंगा।" [27] इस कथन में भी आत्मकथनात्मक शैली के दर्शन होते है।

उपन्यास के अन्य एक प्रसंग में अली अहमद विद्रोह के स्वर में कहता है - " अब हम कहीं नहीं जाएँगे। ई धरती में हमारी नार गड़ी है। ई धरती हमारी है। ई गाँव हमारा है। ... जहाँ हमारी नार गड़ी हैं, हुँवई हमारी लहास भी गडेगी।" [28] उपन्यास का यह संवाद आत्मकथनात्मक शैली का उँचा नमूना पेश करता है।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के कुछ स्त्री पात्रों के भी संवाद आत्मकथनात्मक शैली में प्रकट हूए हैं।

सत्तार की अम्माँ अपना परिचय आत्मकथनात्मक शैली में इस तरह व्यक्त करती हुअी कहती है - "हमारा पूरा खानदान चला गया पाकिस्तान, मुलाँ हम नहीं गए। ये तो सहर है। का पाकिस्तान से बड़ी जगह है इ इलाहाबाद। बारा बरस की उमर में हम हियाँ बहू बनके आए रहीं, तब से ई बलापूर ने हमें अपनी बिटिया की

तरह माना। अउर आज हम पूरे गाँव की भाभी हैं। का कमी है हम्मे इहाँ। अरे, घर का अनाज खतम हो जाएगा तो का गाँव के लोग टूका - भर रोटी भी न देगें ? अब जिंदगी ही कितनी है। आँखे फूट गईं, कान बेकाम हो गए, कबुर में पाँव लटका है। ई चौथेपन में हम आपन गाँव काहे छोड़ें.....? '' [29] यह संवाद आत्मकथनात्मक शैली का ऊँचा नमूना लगता है। जिसमें मुसलमान औरत अपने देशप्रेम को व्यक्त करती है।

इसके अलावा अली अहमद, बुद्धू तथा रनिया का अपने खुद के बारे में सोचना उपन्यास में आत्मकथनात्मक शैली को प्रस्तुत करता है। इन संवादों के माध्यम से 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के संवादों में आत्मकथनात्मक संवादों का प्रयोग पनपता हुआ परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष :-

आत्मकथनात्मक संवादों के कारण पात्रों की आंतरिक मनोवृत्ति के दर्शन होते है, जिससे पात्रों की मनोदशा पूरी तरह विभिन्न प्रसंगो में उद्घाटित हुई हैं।

3.4 प्रबोधनात्मक संवाद

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में प्रबोधनात्मक संवादों का प्रयोग बहुलता से किया है। प्रबोधनात्मक संवादों में एक पात्र दूसरे पात्रों को कुछ न कुछ बताकर उसका प्रबोधन करता है। प्रस्तुत उपन्यास के अनेक पात्र दूसरे पात्रों का प्रबोधन करते हुए उनके व्यवहार तथा आचरण में परिवर्तन करने का प्रयास करते है। ऐसे ही संवादों का विवेचन यहाँ प्रस्तुत है -

अली अहमद रामवृक्ष पाण्डे की शिकायत करने पंडित जवाहरलालजी से मिलने इलाहाबाद जाता हैं वहाँ एक पनवाडी अली का प्रबोधन करते हुए कहता है - "देखो भइया, तुम मुझे बहुत सीधे जान पडते हो, या फिर किसी ने तुम्हें बेकूफ बनाकर यहाँ भेजा है।..... पंडित जवाहरलालजी से भेंट करना इतना सहल नहीं है। उनसे तो बडे-बडे लोग नहीं मिल सकते, हमारी - तुम्हारी क्या बिसात है ? फिर वे यहाँ मिलेंगे कहाँ ? वे तो दिल्ली में रहते हैं। राजधानी तो वहीं है न।'..... देखो मेरे भाई, तुम वापस लौट जाओ और गाँव में सबसे मिलकर रहो। किसी से बैर करना ठीक नहीं। मगर से बैर करके पानी में क्या रहा जा सकता है ? [30] यह प्रबोधनात्मक शैली के संवाद का ऊँचा नमूना यहाँ प्रस्तुत हुआ है।

दुल्लोपूर से बलापूर लौटने के बाद अली सभी गाँववालों से मिलने की इच्छा प्रकट करता है, तथा पाण्डेजी के परिवार से मिलने की बात कहता है, इससे रनिया को धक्का पहुँचता है, तब अली अहमद रनिया का प्रबोधन करते हुए कहता है – " अरे बुद्धू की अम्माँ, जो हुआ सो हुआ; जिसने हमारी बेइज्जती की वह तो अब रहा नहीं। और जो रहा नहीं उससे क्या दुस्मनी ? फिर इसी धरती के रहनेवाले वी भी हैं और हम भी, बैर कैसा ? हमारे मन में तो कोई किना है नहीं....।" [31] यह संवाद प्रबोधनात्मक शैली को उजागर करता है।

उपन्यास के एक प्रसंग में अली अहमद अपने बेटे बुद्धू को पढ़ने - लिखने के बारे में प्रबोधन करते हुए कहता है - "अरे मास्टर साहब ने मार दिया तो क्या हो गया ? हमारे जमाने में तो ऐसी मार पडती थी कि अरहर का सोंटा टूट जाता था। पीठ पर नील पड जाती थी। वो तो हमारी कमअकली और बदकिस्मती थी कि मार के डर से भाग गए और पढ़-वढ़ नहीं सके। कम से कम तुम तो पढ़ लो।" [32] इस संवाद में अली अहमद शिक्षा का महत्त्व स्पष्ट करते हुए बुध्दू को उपदेश करता है।

अन्य एक प्रसंग में बुध्दू भूरी को लेकर भाग जाता है। जिससे क्रोधित होकर गाँववाले अली अहमद की पीटाई करते हैं, अली बुरी तरह जख्मी हो जाता है, तब सत्तार की अम्माँ रनिया से कहती है - " इतने बडे गाँव में हम लोग बत्तीस दाँत में एक जबान की तरह हैं। कोई भी कदम हमें सोच - समझकर उठाना चाहिए। बुधुवा पर नजर रखी गई होती तो आज ई बात न होती।" [33] इस संवाद में भी प्रबोधनात्मक की झलक पनपती है और समाज जीवन में कैसे रहना चाहिए इसकी सीख भी मिलती है।

प्रस्तुत उपन्यास का एक पात्र सत्तार पोस्ट ऑफिस के बचतखातों में जमा हुए पैसों को हडप करता है, जिस कारण उसे काम से निकाला जाता है, उसे पं.

दयाशंकर पाण्डे प्रबोधनात्मक शैली में उपदेश करते हुऐ कहते है - '' देखिए सत्तार बाबू आप अपराधी है या नहीं, उसका फैसला कानून करेगा, मगर गाँववालों के रूपये न मिले तो वे लोग क्या समझेंगे ? इसलिए अच्छा तो यही होगा कि आप खातेदारों का पैसा अदा कर दें। आगे जैसे ईश्वर - इच्छा।'' [34] प्रबोधनात्मक शैली का उत्कृष्ठ नमूना यहाँ व्यक्त हुआ है।

बलापूर के ग्रामप्रधान चुनाव में हर एक उमेदवार अपनी जीत के लिए कोशिश कर रहे थे, इस चुनाव में बुध्दू उर्फ डा. रफी अहमद गाँव के लोगों का प्रबोधन करते हुए कहता है – '' ग्राम प्रधान के लिए उसी को जिताइए, जो गाँव की समस्याओं को समाप्त कर सके। गाँव में कानूनी बिजली जले, पोस्ट ऑफिस से डाक सही वक्त पर बँटे। गलियों में खडंजा बिछे। शहर से गाँव तक सरकारी बस चले। बेरोजगार नौजवानों को रोजगार मिले। गाँव की ऊपरी तरक्की बहुत हो गई, लोगों की मेंटिलिटी बदलने का सरंजाम हो गाँव में पुस्तकालय खुले अखबार आएँ...।'' [35] इस संवाद से गाँव में विकास की गंगा बहने के लिए बुध्दू गाँववालों को प्रबोधनात्मक रूप से प्रेरित करने का प्रयत्न करता है।

उपन्यास के अन्य एक प्रसंग में समाज में स्थापित अन्याय अत्याचार को जड़ से मिटाने के लिए उपन्यास का एक पात्र बवाली सशस्त्र क्रांति की माँग करते हुए कहता है - ''क्रांति तभी होगी जब इस देस के किसान और मजदूर संगठित होंगे। और यह तभी होगा जब कि गाँव - गाँव में किसानों और मजदूरों का संगठन बने।'' [36] तथा किसानों और मजदूरों के दुश्मन की जानकारी देते हुए कहता है - '' मजदुरों का दुस्मन वह है, जो मजदूरी कराके कम पैसा देता है और किसानों का दुस्मन है बडा किसान, जो सारा फायदा खुद हड़प जाता है। '' [37] इन संवादो में समाज के शोषण को मिटाने के लिए गरिबों का संगठन कितना महत्त्वपूर्ण है, इसका प्रबोधन किया गया है। प्रबोधनात्मक शैली का यह सुंदर नमूना है।

निष्कर्ष :-

इन संवादों के माध्यम से उपन्यासकार ने उपन्यास में चित्रित पात्रों का प्रबोधन करके उन्हें व्यावहारिक जगत का परिचय कराके दिया है।

3.5 पात्र परिचयात्मक संवाद

उपन्यासकार अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों का परिचय देनेवाले संवादों को व्यक्त किया है। इन संवादों में कोई एक व्यक्ती दूसरे पात्रों का परिचय देते हुए उनके स्वभावगुण, उनका कार्य, रहन - सहन, समाज में उनका स्थान, उनके संबंध में लोगों का मत, उस पात्र के विचार आदि घटकों को स्पष्ट करता है। जिससे उनके व्यक्तित्त्व की पहचान होती है। इन पात्रों का परिचय करनेवाले संवाद का विवेचन इस प्रकार है - प्रस्तुत उपन्यास में मखदुम नाऊ पंडित जवाहरलाल नेहरूजी के व्यक्तित्त्व के बारे में अली अहमद को परिचय देते हुए कहता है -

" तुम जाके नेहरूजी से सिकायत करो। अब तो उहै राजा हैं न। ऊ त हमरे इलाहैबाद के हैं। ..... मुसलमानों को ऊ बहुत चाहते है। ..... उनकी बिटिया मुसलमानै के हियाँ न ब्याही है। फीरोज नाम है दामाद का। ..... परधानमंत्री बनने के बाद मिर्जापुर गए। ..... बोले अब मैं परधानमंत्री नहीं हूँ। ..... अजीज इमाम की अम्माँ ने जब उन्हें सर्बत बनाके दिया तो डाक्टर लगा चेक करने। इस पर बिगड़ गए ऊ डाक्टर पर। तो इस तरे की मुहब्बत हैं उनके दिल में मुसलमान के वास्ते।" [38] पात्र परिचयात्मक संवाद का यह सुंदर नमूना यहाँ पेश किया गया है।

दुल्लोपुर में अली अहमद पहुँचने के बाद नूरू पतरस भाई से अली का परिचय देते हुऐ कहता है -

" ये हैं अली अहमद। मेरे रिस्तेदार ही समझो। इलाहाबदी हैं। इधर किसी काम - धंधे की तलास में आए हुए हैं। ..... वो भी इलाहाबाद के हैं। इनके चच्चा लगते हैं।" [39] इस संवाद से अली और दलाल चच्चा का परिचय प्राप्त होता है।

अली अहमद जब्बार मौलवी साहब से पाँडे बाबा की शिकायत करने जाता है, तब मौलवी साहब पांडेजी के व्यक्तित्त्व का परिचय देते हुए कहते है –

" पंडितजी कोई ऐसे वैसे आदमी तो हैं नहीं। इलाके के मानिंदा आदमी हैं वो।" [40] तभी एक स्त्री पाण्डेजी के बारे में कहती है - " पाँडे बाबा त बाम्हन देउता अहै। " इन संवादों से रामवृक्ष पाण्डेजी का समाज में जो स्थान है, उसका परिचय प्राप्त होता है।

उपन्यास के अन्य एक प्रसंग में बिट्टन खाला और राबिया इलाज के लिए दुल्लोपुर नुरू के साथ आते है, तब अली अहमद और पतरसभाई को नुरू इन दो स्त्रियों का परिचय कराते हुए कहता है - " मुडकी में इन्हें सब बिट्टन कहते हैं। शौहर इनके कजा कर गए हैं बस यही एक बेटी है राबिया। इधर कुछ दिनों से इसकी तबियत अनमन रहा करती है। अब बेचारी औरत जात,कहाँ लेकर जायँ ? [41] इस संवाद से इन दो स्त्रियों का परिचय प्राप्त होता है।

इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनने के बाद लोग उनके व्यक्तित्व के बारे में चर्चा करते है, गाँव की स्त्रियाँ उनका परिचय देते हुए कहती हैं - "इंदिराजी बडी खपसूरत हैं। ..... परधानमंत्री बनने के बाद अपना कायाकलप कराई हैं। ..... औरतन को अपनी बहिन - जैसी मानती हैं।" [42] इस संवादों से प्रतिक्रियात्मक रूप से इंदिरा गांधीजी का परिचय मिलता है।

अली अहमद रनिया को बंगाली बाबू का परिचय देते हुए कहता हैं -

'' दुबले- पतले हैं। धोती और हाफ कमीज पहनते हैं। बाल खिचडी, गाल पिचडे.....।'' [43] पूरवा में एक महात्माजी आते हैं उनके बारे में लोग परिचय देते हुए कहते हैं - '' बडे प्रतापी महात्मा हैं। ..... जउने आदमी को भभूत दे देते हैं, समझो उसका काम हो गया। ..... खूब गरियाते हैं, चिमटा से मारते हैं। ..... अँग्रेजी में एमे - वोमे हैं। पहले परोफेसर रहे इलाहाबाद में ..... घर - बार सब छोड दिहिन।'' [44] इस संवाद से गाँव में आए नई व्यक्ति का परिचय प्राप्त होता है।

उपन्यास के अन्य एक प्रसंग में बवाली, लता और बुद्धू को एक दूसरे का परिचय देते हुए कहता है - ''ये पं. रामवृक्ष पाण्डे की बिटिया हैं। पं. सृष्टिनारायण पाण्डे की भतीजी, पं. दयाशंकर पाण्डे की छोटी बहिन और पं. अशोककुमार पाण्डे की बुआ।'' तथा बुद्धू का परिचय इस प्रकार देता है - '' ये हैं अली अहमद यानी अल्ली चुडिहार के क्रांतिकारी पुत्र डा. रफी अहमद सिद्दीकी उर्फ बुध्दू।'' [45] पात्र परिचय का यह सुंदर नमूना लेखक ने उपन्यास में पेश किया है।

पं. सृष्टिनारायण पाण्डेजी की हत्या के बाद गाँव के लोग उनके व्यक्तित्त्व की चर्चा करते हुए कहते है - '' सृष्टी पंडित बडे विदवान आदमी रहे।''

दूसरा आदमी कहता है - '' बिदवान तो रहे ही, ई काहे नहीं कहते कि त्यागी केतने बडे रहे। जिंदगी - भर कुवाँरे रह गए। सेवा - भाव अइसन रहा कि बियाह तक नहीं किया।' ..... सरदार पटेल के भगत रहे ऊ। एकदम उन्हीं के अइसी जिंदगी भी जिए। कउनो दाग - धब्बा नहीं।'' [46] इस संवाद से सृष्टिनारायण पाण्डे का मरणोपरांत परिचय प्राप्त होता है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में एक से अधिक लोगों के बीच चर्चा के दौरान विभिन्न पात्रों के गुण - दोष, कार्य, आचरण, व्यवहार की चर्चा होती हैं जिससे पात्रों का यथार्थ परिचय प्राप्त होता है।

3.6 संवादों में प्रयोगशीलता

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में लेखक अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने उपन्यास की कथा से लेकर शैली तक अनेक नये - नये प्रयोगों के माध्यम से उपन्यास का ताना - बाना बुना है। उपन्यासकार ने प्रस्तुत उपन्यास के संवादों को अलग - अलग ढंग से व्यक्त किया है। जिसमें ग्रामीण परिवेश के संवाद, नागरी परिवेश के प्रभाव के आधुनिक संवाद, संवादों में भाषा का मिश्रित रूप, प्राकृतिक वातावरण को स्पष्ट करनेवाले संवाद, संवादों में नाटकीयता एवं सांकेतिकता, कौतुहल तथा उत्सुकता बढ़ानेवाले संवाद आदि कई - नये प्रयोग उजागर हुए हैं उसका विवेचन यहाँ प्रस्तुत है -

ग्रामीण परिवेश के संवाद :-

प्रस्तुत उपन्यास में ग्राम्यभाषा के संवादों की ही बहुलता रही हैं, जिसमें बोलचाल के ग्रामीण भाषा के शब्द के साथ-साथ बुंदेलखंडी भाषा के शब्द भी स्पष्टतया व्यक्त हुए हैं। अली अहमद और दुकानदारिन के बीच के ये संवाद ग्रामीण परिवेश को स्पष्ट करते हैं -

" ' बतासा कइसे दिहू ?'

' अनरसा ?'

' अनरसा नाँही, बतासा।'

' भइया तनी जोर से बोला, हम सुनित कम है।'

' बतासा कइसे दिहू ?'

' बतासा ? चार रूपिया सेर

' अउर बँधुइया लाई ?'

' इकन्नी में आठ

' अरे काहे अइसन अत्त किहे हऊ। इकन्नी के बारा तो हमरे गाँव मा अहै। दुइ पइसा के छै ठै देबू ?'

' पाँच ठे मिली, गुड़ बहुत मँहगा होइ गवा है भइया।" [47]

ये संवाद उपन्यास के ग्राम्य परिवेश को स्पष्ट रूप में व्यक्त करते है।

नागरी परिवेश के प्रभाव के आधुनिक संवाद :-

उपन्यास के शिक्षित पात्र नागरी परिवेश से प्रभावित रहे है, उनकी इस बदली मानसिकता के दर्शन उनके संवादों के माध्यम से उजागर होते है, - बुद्धू और लता के बीच का संवाद देखिए - " इनके लिए पानी का इंतजाम करो। हमारे यहाँ का पानी तो ये पियँगी नहीं।'

क्यों ? पानी पीने में क्या बुराई है ? ' 'देखो बुध्दू अब ये बाते बहुत पुरानी हो गईं समझे ?' शहर में तो सभी लोग सभी के साथ सभी कुछ खा - पी रहे हैं।" [48]

अन्य एक उदाहरण में अजय बवाली को टोकते हुए कहता है -

'' ए बवाली, तुम अपनी पालिटिक्स न भिड़ाओ यहाँ।' ..... जो कुछ देश में हो रहा है, वही गाँव में भी हो रहा है। और अपने बलापुर में जो हो रहा है, वह पुरे हिंदुस्तान में हो रहा है। इसलिए, यह सब इतना सरल नहीं है, जितना कि तुम समझते हो।'' [49]

इन संवादों से उपन्यास के पात्रों पर पडे नागरी परिवेश के प्रभाव का पूरा चित्रण स्पष्ट होता है।

संवादों में भाषा का मिश्रित रूप :-

आजकल भाषा का शुध्द खड़ीबोली रूप बदल कर परिवेशानुकूल मिश्रित भाषा के रूपों का चित्रण हिंदी उपन्यासों में हो रहा हैं। इससे उपन्यास अधिक यथार्थ बनते जा रहे है। 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के संवादों में अनेक भाषाओं का मिश्रण मिलता है। जिससे उपन्यास के संवाद में अनेक भाषा का मिश्रण एक नया प्रयोग दिखाई देता है। अँग्रेजी, बुंदेलखंडी, अरबी - उर्दू - फारसी शब्दों के मिश्रण से उपन्यास के संवाद बने है।

अँग्रेजी शब्द मिश्रित संवाद :-

उपन्यास के एक प्रसंग में अँग्रेजी शब्दों का भाषा में प्रयोग करते हुऐ लल्लू बुद्धू से कहता है -

'' नो, नो। अब मैं एक सीरियस मैन हो गया हूँ ..... बट एवहरी व्हेअर आई यूज टू टाक इन इंग्लिस। लखनऊ में एक कंपिटीसन हुआ था इंग्लिश टाकिंग का उसमें फर्स्ट आया हूँ।'' [50]

अरबी - उर्दू - भाषा के मिश्रण से बने संवाद :-

चूनिया की शादी में एक युवक एक प्रस्ताव रखते हुऐ कहता है - ''सिद्दीकी का मतलब है हज़रत सिद्दीक रजिअल्ला तआला की नस्लवाले। हज़रत सिद्दीक रजिअल्लाह तआला वो पहले शख्स हैं जिन्होंने इस्लाम कबूल किया था। हज़रत सिद्दीक चुड़िहार थे या नहीं, यह तो नहीं मालूम, पर जैसे वे सच्चे इंसान थे वैसे ही चुड़िहार थी हैं। अपना काम सिद्क दिल से करते हैं। इसलिए उन्हें सिद्दीकी लिखना चाहिए।'' [51]

बुंदेलखंडी भाषामिश्रित संवाद :-

प्रस्तुत उपन्यास में भूरी की अम्माँ और उसके पडोस की स्त्री के बीच झगडा होता है, उनकी भाषा बुंदेलखंडी भाषा के शब्दों से मिश्रित से बनी हैं देखिए -

'' अरे बेटखई, तैं राँड़ होइ जा। तोरे आदमी क लहास निकरे।'

' चोप भतारकाटी, कुलच्छिन, बिटिया मियाँ के संग भग गई अऊर तैं जिंदा है रे ? सरम नहीं आवै।'

'हाँ, हाँ, मोर बिटिया त मियाँ के संग भग गई मुलाँ ऊ बियाह किहीसे रे बियाह। अउर तोर बिटिया ? हम जनती नहीं का रे ? परसाल के आपन बिटिया के पेट गिरवाय रहा ? अरे मोर बप्पा। कुंवारि बिटिया क पेट।'' [52]

ये संवाद परिवेशजन्य स्थितियों को उभारकर पात्रों की स्थितियों के गवाह बनते हुए दिखाई देते हैं।

संवादों में नाटकीयता और सांकेतिकता :-

प्रस्तुत उपन्यास के संवादों में नाटकीयता और सांकेतिकता के दर्शन होते हैं, जिससे उपन्यास के संवाद दिलचस्प बन पडे हैं। अशोककुमार पाण्डे और बिशुन भाट के बीच इस तरह संवाद है -

'' बिशुन पंडित, हमारी समस्या गंभीर है। अब आप ही कुछ उपाय करें।'

'सत्रु का नाम बताएँ महराज।'

'शत्रु नहीं पंडित, मित्र है वह।'.....

'..... देखिए महराज, जो भी बात है, खोलकर कहिए। बुझउवल बुझाने से जोतिष का काम नहीं चलता। जोतिष तो गणित है, गणित समझे ?'

-बात ये है पंडित कि मैं एक लडकी को .....।'

'तो ऐसे बोलिए न महराज। नाम क्या है उसका ?'

'नाम ? नाम तो पंडित.....।'

'नाम नहीं बता सकते तो नाम का प्रथम अक्षर ही बताइए।'

'जी,जी, नाम का प्रथम अक्षर 'त' है।''

इन संवादों में नाटकीयता तथा सांकेतिकता के दर्शन होते हैं।

निष्कर्ष :-

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के संवादों में लेखक ने अनेक नए - नए प्रयोग किये हैं जिससे उपन्यास की भाषा विविधांगी दिखाई देती है, संवादों में लेखक ने ग्रामीण भाषा, नागरी परिवेश की परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग किया है, साथ ही नाटकीयता, सांकेतिकता इन विशेषताओं के कारण उपन्यास के संवाद में स्वाभाविकता दिखाई देती है।

समन्वित निष्कर्ष :-

'मुखड़ा क्या देखे' के संवादों में नये - नये प्रयोगों की अवधारणा देखने को मिलती है। इस उपन्यास के संवादों में परिवेशानुकूलता, आत्मकथनात्मकता, प्रबोधनात्मकता, पात्र परिचयात्मकता के दर्शन होते हैं। संवाद पात्रानुकूल, परिवेशानुकूल, पात्रों की प्रवृत्ति एवं स्वभाव के अनुकूल, भावानुकूल संवेदनशील है। संवादो में भाषागत विविधताने एक नई भाषा को जन्म दिया है और शुध्द भाषा के रूप को चकनाचूर किया है। संवादों में लेखक की प्रयोगशिलता के दर्शन होते हैं।

संक्षिप्त में –

१) उपन्यास के संवाद यथार्थ और स्वाभाविक होने के कारण समझने में आसान है।
२) संवादों में नई अवधारणाओं का प्रयोग मिलता है, जिससे संवादों में पैनापन आया है।
३) प्रस्तुत उपन्यास के संवाद परिवेश की जानकारी देने में सक्षम है। आत्मकथनात्मक और प्रबोधनात्मक संवादों के कारण पात्रों की आंतरिक मनोवृत्ति के दर्शन होते हैं।
४) प्रस्तुत उपन्यास के संवादों से उपन्यास की कथा का अतीत, चित्रात्मक रूप से सामने आता है।
५) उपन्यासकार ने संवादों में अनेक भाषाओं का प्रयोग करके संवादों में मिश्रित भाषा शैली का नया प्रयोग किया है।
६) उपन्यास में पात्रों की योग्यता, एवं भावभंगिमा संवादों के माध्यम से व्यक्त हुअी है।
७) उपन्यास के संवाद कथावस्तु के विकास मे, पात्रों के चरित्रांकन में एवं उद्‌देश्य की अभिव्यक्ति में पर्याप्त सहायक सिद्‌ध हुऐ है।

संदर्भ - ग्रंथ

1. 'साहित्यालोचन' - श्यामसुन्दर दास, पृष्ठ - 205
2. 'हिन्दी उपन्यास कला' - डा. प्रतापनारायण टंडन, पृष्ठ - 222-223
3. 'मुखड़ा क्या देखे' - पृष्ठ - 102
4. वही, पृष्ठ - 187
5. वही, पृष्ठ - 187
6. वही, पृष्ठ - 14
7. वही, पृष्ठ - 15
8. वही, पृष्ठ - 207
9. वही, पृष्ठ - 110
10. वही, पृष्ठ - 164
11. वही, पृष्ठ - 34
12. वही, पृष्ठ - 44
13. वही, पृष्ठ - 42
14. वही, पृष्ठ - 42
15. वही, पृष्ठ - 121 - 122
16. वही, पृष्ठ - 219
17. वही, पृष्ठ - 203
18. वही, पृष्ठ - 224
19. वही, पृष्ठ - 201
20. वही, पृष्ठ - 221
21. वही, पृष्ठ - 61
22. वही, पृष्ठ - 65
23. वही, पृष्ठ - 199
24. वही, पृष्ठ - 39
25. वही, पृष्ठ - 44
26. वही, पृष्ठ - 51
27. वही, पृष्ठ - 181
28. वही, पृष्ठ - 221
29. वही, पृष्ठ - 200
30. वही, पृष्ठ - 38 - 39
31. वही, पृष्ठ - 104
32. वही, पृष्ठ - 123
33. वही, पृष्ठ - 158
34. वही, पृष्ठ - 189

35. 'मुखड़ा क्या देखे' पृष्ठ - 201 - 202
36. वही, पृष्ठ - 212
37. वही, पृष्ठ - 212
38. वही, पृष्ठ - 35
39. वही, पृष्ठ - 56
40. वही, पृष्ठ - 32
41. वही, पृष्ठ - 70
42. वही, पृष्ठ - 130
43. वही, पृष्ठ - 165
44. वही, पृष्ठ - 179 - 180
45. वही, पृष्ठ - 202 - 203
46. वही, पृष्ठ - 219
47. वही, पृष्ठ - 36 - 37
48. वही, पृष्ठ - 207
49. वही, पृष्ठ - 219
50. वही, पृष्ठ - 187
51. वही, पृष्ठ - 110
52. वही, पृष्ठ - 177 - 178